भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 3506
उत्तर देने की तारीख 10.08.2026

संबलपुरी सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और संवर्धन

3506. श्री प्रदीप पुरोहित :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार ने पश्चिमी ओडिशा के संबलपुरी हथकरघा बुनाई, लोक संगीत, लोक नृत्य और पारंपरिक त्योहारों से जुड़ी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का दस्तावेजीकरण, संरक्षण और संवर्धन करने के लिए कोई पहल की है;

(ख) क्या इन परंपराओं को राष्ट्रीय अथवा अंतर्राष्ट्रीय विरासत मान्यता कार्यक्रमों में शामिल करने के लिए कोई प्रस्ताव प्राप्त हुआ है; और

(ग) विगत पांच वर्षों के दौरान उनके संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रदान की गई वित्तीय सहायता का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): संस्कृति मंत्रालय, अमूर्त सांस्कृतिक विरासत (आईसीएच) के लिए नोडल एजेंसी संगीत नाटक अकादमी (एसएनए) के माध्यम से, भारत की पारंपरिक हथकरघा बुनाई, लोक संगीत, लोक नृत्य और उत्सवों सहित अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के प्रलेखन, परिरक्षण और संवर्धन के लिए कदम उठाता है।

एसएनए अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की राष्ट्रीय सूची का रखरखाव करता है और समय-समय पर उसे अद्यतन करता है तथा पात्र आईसीएच घटकों को शामिल करने के लिए समुदायों, राज्य सरकारों और अन्य हितधारकों से प्राप्त प्रस्तावों पर विचार करता है।

भारत की जीवित सांस्कृतिक परंपराओं को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देने के उद्देश्य से, भारत सरकार अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की संरक्षा के लिए यूनेस्को 2003 कन्वेंशन का भाग बनी।

(ख): वर्तमान में, मंत्रालय के पास ऐसा कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

(ग): पश्चिमी ओडिशा की संबलपुरी हथकरघा बुनाई, लोक संगीत, लोक नृत्य और पारंपरिक महोत्सवों से जुड़ी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के परिरक्षण और संवर्धन के लिए विशेष रूप से कोई समर्पित धनराशि निर्धारित नहीं की गई है। तथापि, संस्कृति मंत्रालय पारंपरिक कला रूपों और अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के संवर्धन और परिरक्षण के लिए संबद्ध सांस्कृतिक कार्यकलापों के लिए वित्तीय सहायता की स्कीम, सांस्कृतिक समारोह एवं निर्माण अनुदान (सीएफपीजी) स्कीम और भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तथा विविध सांस्कृतिक परंपराओं की संरक्षा हेतु स्कीम सहित विभिन्न स्कीमें और कार्यक्रम संचालित करता है।

इसके अतिरिक्त, संगीत नाटक अकादमी, क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (जेडसीसी) जैसे संगठन देश भर में पात्र अमूर्त सांस्कृतिक परंपराओं की संरक्षा के लिए प्रलेखन, अनुसंधान, प्रशिक्षण, कार्यशालाओं, महोत्सवों जैसे कार्यकलापों और अन्य उपायों के लिए सहायता प्रदान करते हैं।

*****